



बुधवार

20 मार्च 2024, फाल्गुन शुक्रवर पक्ष, एकादशी, विक्रम सम्वत् 2080, धनबाद

नगर संकारण, वर्ष 14, अंक 68, 14 पैज, जूल्य 5.00

हिन्दुस्तान

भरोसा नए हिन्दुस्तान का

नवजोत सिंह
सिद्ध एक दशक
बाट कमेंट्री बॉक्स
में वापसी करेंगेप्रमुख
पांचईदगाह विवाद पर
याचिकाओं का निपटारा

1 कोटि ने ईदगाह विवाद से जुड़े 15 वार्षिक याचिका को खोले के लिए इनकाल याचिका का निपटारा कर दिया। P13

श्रीलंका में राष्ट्रपति
चुनाव की तैयारी

2 श्रीलंका में गैंगेंडल वो इस साल को लोगों द्वारा आयोगी घोषित किया गया है।

3 छह खेल एक्सेलेंस सेंटरों में चयन 21 से

3 झारखंड सरकार द्वारा खोले गए 6 खेल एक्सेलेंस सेंटरों के लिए प्रीव्यूओं का चयन 21 मार्च से शुरू होगा। P12

नया सिम अब तुरंत पोर्ट नहीं होगा

4 ट्राई सिमकार्ड को लोकर नए नियम एक जुलाई से लागू करेगा। इस पोर्ट को के लिए नए नियम होंगे। P12

नकली दवाओं का हो असली इलाज

5 बाजार में नकली यादिया दवाओं की विस्तृती 35 से 40 प्रतिशत तक बढ़ावा जाती है। यह गैंगेंडल दवाओं का विषय है। नकली दवा कारोबारियों पर तकलीफ नवेल कसनी शुरू होती है। P10

ज्ञामुमों को झटका: पार्टी सुप्रीमो को पत्र भेज दिया इस्तीफा और दिल्ली में ली सदस्यता

शिवू सोरेन की बड़ी बहू सीता भाजपा में शामिल



नई दिल्ली में मंगलवार को पार्टी मुख्यालय में भाजपा की सदस्यता ग्रहण करती सीता सोरेन। इस मौके पर भाजपा महामंत्री विनोद तावड़े और शारखंड प्रभारी लक्ष्मीकांत वाजपेयी ने गुलदस्ता देकर उनका स्वागत किया।

राज्य के विकास के लिए संघर्ष रहंगी: सीता

झारखंड में भाजपा की एक और ताकत बढ़ी: तावड़े

समर्पित कार्यकर्ता का पार्टी छोड़ना हित में नहीं: सुप्रियो

रांची, मुख्य संवाददाता। ज्ञामुमों सुप्रीमो शिवू सोरेन के परिवार में पार्टी गठन के पांच दशक बाद पहली बार टूट हुई। मंगलवार को शिवू सोरेन की बड़ी बहू और पूर्व सीमा हमंत सोरेन की भाषी सीता सोरेन ने ज्ञामुमों से देव बाट देविया दिया। इसीके के कुछ ही देर बाट वे दिल्ली में भाजपा में शामिल हो गईं। सीता सोरेन ने नई दिल्ली स्थित पार्टी मुख्यालय में भाजपा की सदस्यता ग्रहण की।

इस मौके पर भाजपा महामंत्री विनोद तावड़े, शारखंड प्रभारी लक्ष्मीकांत वाजपेयी और राज्यालय प्रवक्ता संजय मुख्य भौजूद रहे। वहाँ बता दें कि शिवू सोरेन के बड़े बेटे दुर्गा सोरेन की 2009 में मौत के बाद उसी साल हुए विधानसभा चुनाव से सीता दुमका जिले की जाम सीट से लगावार तीन बार विधायिक निवारित होकर पार्टी का विधायिक निवारित कर रही थीं। ज्ञामुमों के राजनीतिक दल के तौर पर गठन के बाद परिवार में बहु पहली टूट है।

इसीका भैजकर उपेक्षा का लगावा अरोप: सीता सोरेन ने अपना इसीका मंगलवार का दोहराह 1 बजे पार्टी का विधायिक निवारित होकर पार्टी का राजनीतिक दल के तौर पर गठन के बाद परिवार में बहु पहली टूट है।

ज्ञामुमों के राज्य के सदस्यता ग्रहण की ताकत बढ़ी है। उन्होंने अपनी के लिए एक संघर्ष रहंगी।

हालात सुधरेंगे, लेकिन दुर्भाग्यवश ऐसा

के हाथ है, जिनका दृष्टिकोण और उद्देश्य हमारे अपने संघर्ष में बहुत खाता।

सीता ने पर्यामें यही उल्लेख किया है कि शिवू सोरेन ने सबको एक जुटा

किया। लेकिन उन्होंने अपनी के लिए संघर्ष रहंगी।

ज्ञामुमों की उल्लेखनीय बहुत अच्छी तरह बढ़ी है।

ज्ञामुमों की उल्लेखनीय बहुत अच



चुनाव आयोग से

कौन है प्रत्याशी और कहां करें मतदान, ऐप करेगा राह आसान

देश में लोकसभा चुनाव की घोषणा के साथ आचार संहिता लागू हो चुकी है। आयोग ने इस बार मतदाताओं और उम्मीदवारों से लेकर चुनाव आचार संहिता में जनभागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए कई ऐप बनाए हैं। मतदाता घर बैठे वोटर लिस्ट में अपना नाम और मतदान केंद्र से लेकर प्रत्याशियों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। वहीं, उम्मीदवारों को चुनाव आयोग से मंजूरी पाने के लिए कार्यालयों के घर बैठकर नहीं लगाने पड़ेंगे...

सीविजिल: इस पर सीधी शिकायत होगी। आचार संहिता उल्लंघन पर नजर रखना चुनाव आयोग के लिए बड़ी चुनौती होती है। इस ऐप के माध्यम से लोग चुनाव आचार संहिता के उल्लंघन और शेरकानी गतिविधियों के बारे में आयोग को सीधे शिकायत भेज सकते हैं। इस पर उल्लंघन संबंधित बीडियो और फोटो भी आलाद़ किए जा सकते हैं। खास बात यह है कि इसमें आपको लोकेशन की जरूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि आयोग का यह ऐप खुद ही उस जाह की पहचान कर लेगा। इससे कोई भी आचार संहिता उल्लंघन की शिकायत बिना कहीं जाए जा सकती है।



वोटर हेल्पलाइन

इस मोबाइल ऐप पर चुनाव आयोग की ओर से मतदान के लिए उपलब्ध सभी सेवाएं मिलती हैं। आप मतदाता सूची में नाम देखने से लेकर पोलिंग स्टेशन तक की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

आप आपका नाम मतदाता सूची में नहीं हो या किसी कारण कट गया है तो इस ऐप से मतदाता सूची में कार्म-6 के लिए नाम जोड़ने के लिए आवेदन भी कर सकते हैं।

केवाईसी (नो योर कैंडिडेट)

अपनी आप जिस संसदीय क्षेत्र के मतदाता हैं वहां के उम्मीदवारों की जानकारी लेने के लिए आपके पास कई आसान साधन नहीं था। अब चुनाव आयोग ने केवाईसी ऐप तैयार किया है। इसमें चुनाव लड़ रहे सभी उम्मीदवारों के नाम, उनका संसदीय क्षेत्र, उनका कुपर दर्ज आपाधिक मामला, उनकी आय व संपत्ति की जानकारी भी देख सकते हैं।

वोटर टर्नआउट

चुनाव आयोग ने मतदाता सूची के साथ योटों की मिनीती व चुनाव नतीजों की जानकारी के लिए यह ऐप बनाया है। इसमें देश की हर लोकसभा सीट के नतीजों की जानकारी घर बैठे मिलेंगे।

सुविधा-कैंडिडेट

राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों को अब किसी चुनावी कार्यक्रम की मंजूरी के लिए चुनाव अधिकारियों के बाहर जानकारी घर बैठे मिलेंगे।

सक्षम-ईसीआई

दिव्यांग मतदाता इस पर आना नाम मतदाता सूची में देख सकते हैं। केंद्र की जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं। फोटो की जानकारी घर बैठे मिलेंगे।

चुनाव प्रबंधन के लिए तीन ऐप

इनकारे (ईएनसीओआई) ऐप पर चुनाव प्रबंधन की अल्मोड़ा-पिथौरांगढ़ सीट आरक्षित नहीं थी। वहाँ, ईस्टरांगड़ (चुनाव जटी प्रधान) ऐप के जरिए चुनाव के दौरान आचार संहिता उल्लंघन से संबंधित कार्रवाई की जाएगी। तीसरा ऑडिट की जाएगी। तीसरा ऑडिटर ऐप है, जिसमें पर्यवेक्षक अपनी रिपोर्ट देंगे।

वे दिन

किसी 1989 का

सियासी अनबन के बीच सभा में हेलीकॉप्टर ने जुटाई भीड़

■ हरीश रावत की रैली में एनडीटीवारी के दरी से आने से लौट रही थी भीड़

हरीश रावत ने हुजूम देख मंच संभाला

जनसभा में लोगों को उमड़ा देख हरीश रावत ने मंच संभाला। उन्होंने एनडीटीवारी का आचार जारी रहे एनडीटीवारी के लिए भाषण भी दिया। बाद में एनडीटीवारी को भी उड़े जितने के लिए मंच से भाषण देना पड़ा।

तथा लेकिन दो बजे तक वह नहीं आए।

इस बारे में डॉ. प्रभात ने एनडीटीवारी के स्टाफ में मौजूद अपने एक साथी से संपर्क किया तो तापा चला गया।

अल्मोड़ा-पिथौरांगढ़ में दो दिग्गजों के आमने-सामने होने के कारण देशभर की जरूरत वाली थी। राजनीतिक दिलेखों की माने तो इस जीत में युरिलम वोटरों का अहम रोल रहा। बाकी पांच सीट भाजपा और उसके सहयोगी आजसू के खाते में गई थी।

■ प्रभात ने उच्चनंदे में जानवृकार देरी की ओर लोग निराश होकर लौटने लगे, लोकान हाईकोर्ट के निर्देश पर आखिर रावत तिवारी को सभा में पहुंचना पड़ा। तब स्ट्रेटिजिम में उनके हेलीकॉप्टर को देखने के लिए जबरदस्त भीड़ उमड़ पड़ी।

हेलीकॉप्टर के लिए जितने दो बजे तक वह नहीं आए।

अल्मोड़ा-पिथौरांगढ़ में दो दिग्गजों के आमने-सामने होने के कारण देशभर की जरूरत वाली थी। राजनीतिक दिलेखों के स्टाफ में एनडीटीवारी को लिए जानता से समर्थन मार्ग था। इस जनसभा में युरिलम वोटरों पर कम दर्ज करा दिया गया। तभी भीड़ से गदगद अभिनंदन दिलेप कुमार ने अपने कई प्रसिद्ध डायलॉग्स सुनाकर लोगों का दिल जीत लिया था।

बायटकोपा | डायलॉग सुनारे जोग्डी किंग वेमांगा था समर्थन



ट्रेडिंग किंग के नाम से मशहूर फिल्म अभिनेता दिलेप कुमार वर्ष 1999 के लोकसभा चुनाव में मुख्यालय आए थे। उन्होंने जीआईसी के मैदान में आयोजित जनसभा में कांग्रेस प्रत्याशी रीना कुमारी के लिए जनता से समर्थन मार्ग था। इस जनसभा में युरिलम वोटरों से गदगद अभिनंदन दिलेप कुमार ने अपने कई प्रसिद्ध डायलॉग्स सुनाकर लोगों का दिल जीत लिया था।

जमशेदपुर पूर्वी से लड़ूंगा विधानसभा चुनाव: सरयू



- विधानसभा चुनाव लड़ने का किया ऐलान
- धनबाद द्वारा चतरा से लोस का चुनाव नहीं लड़ने

जमशेदपुर, बरीय संवाददाता। विधायक सरयू राय के धनबाद या चतरा से लोकसभा चुनाव लड़ने की अटकलों पर विराम लग गया है। उन्होंने मंगलवार को स्पष्ट किया कि दोनों स्थानों से चुनाव लड़ने की बातें राजनीतिक अटकलें हैं। प्रेस बयान में उन्होंने कहा, उनके पास धनबाद व चतरा से सैकड़ों फोन आ रहे हैं कि वे बाहर से चुनाव लड़ें। मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मेरी प्राथमिकता जमशेदपुर पूर्वी से विधानसभा का अगला चुनाव लड़ना है।

प्राथमिकता में विधानसभा चुनाव संवर्धन पर विराम हो रहा है। ऐसे तबोचे से जमशेदपुर पूर्वी की जनता को पूर्णतः मुक्तिदालए बरीय जनता से किया भेरा जावा पूरा नहीं हो पाएगा। जमशेदपुर पूर्वी की जनता का मुझ पर ज़रूर है, मैं उसे चुकाने का प्रयास कर रहा हूं।

विधायक बनाया, उन तत्वों के अवशेष किर से उत्तरांगने ले रहे हैं। ऐसे तबोचे से जमशेदपुर पूर्वी की जनता को पूर्णतः मुक्तिदालए बरीय जनता से आपात्कालीन एक संपर्क किया जावा है।

■ क्या कोई व्यक्ति एक से अधिक स्थान पर मतदाता सूची में पंजीकरण करा सकता है?

लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 की धाराओं 17 और 18 के अनुसार कांड़ी भी व्यक्ति एक से अधिक स्थानों पर मतदाता सूची में पंजीकरण नहीं करा सकता है। अगर आवेदक का नाम दो जगह मतदाता सूची में है तो वह लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 की धारा 31 के तहत दंड का पात्र होगा।

■ क्या कोई व्यक्ति एक से अधिक स्थान पर मतदाता सूची में संपर्क करा सकता है?

कोई व्यक्ति एक से अधिक स्थानों पर मतदाता सूची में संपर्क करा सकता है। लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 की धारा 31 के तहत दंड का पात्र होगा। अगर प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 की धारा 31 के तहत दंड का पात्र होगा।

■ क्या कोई व्यक्ति एक से अधिक स्थानों पर विधानसभा चुनाव से लेता है?

कोई व्यक्ति एक से अधिक स्थानों पर विधानसभा चुनाव से लेता है। इसलिए सांसदों के साथ संरक्षण के बारे में विवाद होता है। इसलिए सांसदों से संरक्षण के बारे में विवाद होता है।

■ क्या कोई व्यक्ति एक से अधिक स्थानों पर विधानसभा चुनाव से लेता है?

महाराष्ट्र के अधिकारी चार्ल्स एंड्रियू ने अपने एक स्टाफ में एनडीटीवारी के लिए जितने दो बजे तक वह नहीं आए।

■ क्या कोई व्यक्ति एक से अधिक स्थानों पर विधानसभा चुनाव से लेता है?

महाराष्ट्र के अधिकारी चार्ल्स एंड्रियू ने अपने एक स्टाफ में एनडीटीवारी के लिए जितने दो बजे तक वह नहीं आए।

कुनबे की सियासत

केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री पशुपति कुमार पारस के मंत्रिमंडल से इस्टीफे की खबर जिस समय आई, लगभग उसी वक्त झारखंड मुक्ति मोर्चा की विधायक और शिशू सोरेन की बड़ी बूँद सीता सोरेन के भाजपा का दामन थामने की भी सूचना आई। ये दोनों खबरें विहार-झारखंड में राजनीतिक नफे-नुकसान से ज्यादा सियायी खानदानों के अंतर्गत में महत्वाकांक्षाओं की घिनूनी करती हैं। विडंबना यह है कि बड़े राजनीतिक दल भी ऐसे परिवारों के इद्दगिर्द अपने लिए संघवानाएं तलाशें के अदी हो चले हैं। यही कारण है कि एक गठबंधन को छोड़ने के बाद ये दूसरे गठजोड़ में असानी से वही मुकाम हासिल कर लेते हैं। पशुपति कुमार पारस को आज शिकायत है कि एनडीए में उनके साथ नाइंसाफी हुई है, मगर यह सवाल उन्हें खुद से पूछना चाहिए कि आखिर उनके साथी सांसद चिराग पासवान के बाहं क्यों हाजिरी लगा रहे थे? दरअसल, वे जानते थे कि सत्ता-संर्धे में पारस ने भले मंत्री पद हासिल कर लिया हो, मगर अवाम के बीच चिराग ही सक्रिय रहे हैं और उनकी सभाओं में उमड़ती भीड़ की एनडीए व भाजपा का नेतृत्व नज़रदार नहीं कर सकता। तब तो और, जब बिहार में एनडीए के सामने अपनी सीटें बचाने की बड़ी चुनौती है!

पिछले चुनाव में इस गठजोड़ के पास 40 में से 39 सीटें थीं।

झारखंड के सोरेन परिवार की कहानी इससे अलग नहीं है। हेमंत

सोरेन की गिरफ्तारी के बाद जब वह मुख्यमंत्री पद की बौद्धि में उनकी पत्नी कल्पना का नाम उछला, तभी यह खबर भी आई थी कि सीता सोरेन इसके खिलाफ है, तब शिशू-हेमंत सोरेन के भरोसेमंद सहोयोगी व पार्टी के वरिष्ठ विधायक चंपाई सोरेन के नाम पर सहमति बनी थी और परिवार में बागवत की आवाज बड़ी थी, मगर अब सीता सोरेन ने ज्ञानुमो का दामन झटककर साफ कर दिया है कि वह महज क्यासबाजी नहीं थी।

बहरहाल, सीता के इस फैसले से हेमंत सोरेन की गिरफ्तारी और जेल पर सहानुभूति बोट बटोरेने की ज्ञानुमो सीता अब सोरेन परिवार में अपने साथ नाइंसाफी को मुद्रदा बनाएंगी।

भारतीय लोकतंत्र की यह कटु सच्चाई है कि मतदाताओं ने ही इन परिवारों को मान्यता दी है और यही कारण है कि जो राजनेता या राजनीतिक पार्टियां सार्वजनिक तौर पर परिवारवाद की आलोचना करती हैं, वे भी इनकी शरण में जाने से नहीं करती हैं। मगर पशुपति पारस हों, सीता सोरेन हों या राज टाकर हों, वे परिवार की विरासत का लाभ तो उठाना चाहते हैं, मगर भूल जाते हैं कि राजनीतिक वारिस के चयन का अधिकार जनता ने राजनीतिक दलों को नहीं सौंपा है, बल्कि अपने पास रखा है, और वह सिर्फ खानदान का सदस्य होने मात्र से किसी को संसद या विधानसभा में बार-बार नहीं भेजती, उस सरकारी निजी शखियत की भी समान रूप से उत्तराया जाती है।

कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियों में तो नुकसान दोतरका है। इसमें सिर्फ सीता या कुस्ती ही महत्वपूर्ण लक्ष्य है, सामाजिक-संस्थागत बदलाव की राजनीति लगातार पिछड़ती जा रही है, इसलिए बगवतें भी मूल्यों को लेकर नहीं, पदों से प्रेरित होने लगी हैं।

व इंडिया ब्लॉक को रणनीति को लिया गया है और यही कारण है कि एनडीए के बाद गणराज्य-राज्य जिन परिवारों में अपने साथ नाइंसाफी को मुद्रदा बनाएंगी।

भारतीय लोकतंत्र की यह कटु सच्चाई है कि मतदाताओं ने ही इन परिवारों को मान्यता दी है और यही कारण है कि जो राजनेता या राजनीतिक पार्टियां सार्वजनिक तौर पर परिवारवाद की आलोचना करती हैं, वे भी इनकी शरण में जाने से नहीं करती हैं। मगर पशुपति पारस हों, सीता सोरेन हों या राज टाकर हों, वे परिवार की विरासत का लाभ तो उठाना चाहते हैं, मगर भूल जाते हैं कि राजनीतिक वारिस के चयन का अधिकार जनता ने राजनीतिक दलों को नहीं सौंपा है, बल्कि अपने पास रखा है, और वह सिर्फ खानदान का सदस्य होने मात्र से किसी को संसद या विधानसभा में बार-बार नहीं भेजती, उस सरकारी निजी शखियत की भी समान रूप से उत्तराया जाती है।

इसके बाद गणराज्य-राज्य जिन परिवारों में अपनी मजबूत राजनीतिक पहचान बनाई है, उनके संघर्षील सदस्य ही अपनी विरासत को आगे ले जा सके हैं, अन्यथा जनता द्वारा नकार गये एवं राजनीतिक परिवारों की संख्या भी कोई कम नहीं है। इसलिए मौजूदा दोनों में परिवारवाद से ज्यादा चिंता की बात मौकापारस्त राजनीति है। इसमें सिर्फ सीता या कुस्ती ही महत्वपूर्ण लक्ष्य है, सामाजिक-संस्थागत बदलाव की राजनीति लगातार पिछड़ती जा रही है, इसलिए बगवतें भी मूल्यों को लेकर नहीं, पदों से प्रेरित होने लगी हैं।

विंडिया ब्लॉक को रणनीति को लिया गया है और यही कारण है कि एनडीए के बाद गणराज्य-राज्य जिन परिवारों में अपने साथ नाइंसाफी को मुद्रदा बनाएंगी।

भारतीय लोकतंत्र की यह कटु सच्चाई है कि मतदाताओं ने ही इन परिवारों को मान्यता दी है और यही कारण है कि जो राजनेता या राजनीतिक पार्टियां सार्वजनिक तौर पर परिवारवाद की आलोचना करती हैं, वे भी इनकी शरण में जाने से नहीं करती हैं। मगर पशुपति पारस हों, सीता सोरेन हों या राज टाकर हों, वे परिवार की विरासत का लाभ तो उठाना चाहते हैं, मगर भूल जाते हैं कि राजनीतिक वारिस के चयन का अधिकार जनता ने राजनीतिक दलों को नहीं सौंपा है, बल्कि अपने पास रखा है, और वह सिर्फ खानदान का सदस्य होने मात्र से किसी को संसद या विधानसभा में बार-बार नहीं भेजती, उस सरकारी निजी शखियत की भी समान रूप से उत्तराया जाती है।

कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियों में तो नुकसान दोतरका है। इसमें साफ और चिंता की बात मौकापारस्त राजनीति है। इसमें सिर्फ सीता या कुस्ती ही महत्वपूर्ण लक्ष्य है, सामाजिक-संस्थागत बदलाव की राजनीति लगातार पिछड़ती जा रही है, इसलिए बगवतें भी मूल्यों को लेकर नहीं, पदों से प्रेरित होने लगी हैं।

अन्यथा जनता और सुरक्षा को खाता रखने की मुख्य जिम्मेदारी संयुक्त गणराज्य से परे होती है। अटलांटिक संघ के लिए क्या यह वाद है कि अधिकारी संघ के प्रकार उद्देश्यों ने अपने साथ नाइंसाफी को लिया है और यही कारण है कि एनडीए के बाद गणराज्य-राज्य जिन परिवारों में अपने साथ नाइंसाफी को मुद्रदा बनाएंगी।

इस संघ की समस्या महत्वपूर्ण धारा वह है, जिसके अनुसार इस संघ पर हस्ताक्षर करने वाले देश यह उनमें एक अधिक विश्वास रखते हैं। अधिक अपने पास रखा है, और यही कारण है कि एनडीए के बाद गणराज्य-राज्य जिन परिवारों में अपने साथ नाइंसाफी को मुद्रदा बनाएंगी।

अन्यथा जनता और सुरक्षा को खाता रखने की मुख्य जिम्मेदारी संयुक्त गणराज्य से परे होती है। अटलांटिक संघ के लिए क्या यह वाद है कि अधिकारी संघ के प्रकार उद्देश्यों ने अपने साथ नाइंसाफी को लिया है और यही कारण है कि एनडीए के बाद गणराज्य-राज्य जिन परिवारों में अपने साथ नाइंसाफी को मुद्रदा बनाएंगी।

इसके बाद गणराज्य-राज्य जिन परिवारों में अपने साथ नाइंसाफी को मुद्रदा बनाएंगी।

अन्यथा जनता और सुरक्षा को खाता रखने की मुख्य जिम्मेदारी संघ के प्रकार उद्देश्यों ने अपने साथ नाइंसाफी को लिया है और यही कारण है कि एनडीए के बाद गणराज्य-राज्य जिन परिवारों में अपने साथ नाइंसाफी को मुद्रदा बनाएंगी।

अन्यथा जनता और सुरक्षा को खाता रखने की मुख्य जिम्मेदारी संघ के प्रकार उद्देश्यों ने अपने साथ नाइंसाफी को लिया है और यही कारण है कि एनडीए के बाद गणराज्य-राज्य जिन परिवारों में अपने साथ नाइंसाफी को मुद्रदा बनाएंगी।

अन्यथा जनता और सुरक्षा को खाता रखने की मुख्य जिम्मेदारी संघ के प्रकार उद्देश्यों ने अपने साथ नाइंसाफी को लिया है और यही कारण है कि एनडीए के बाद गणराज्य-राज्य जिन परिवारों में अपने साथ नाइंसाफी को मुद्रदा बनाएंगी।

अन्यथा जनता और सुरक्षा को खाता रखने की मुख्य जिम्मेदारी संघ के प्रकार उद्देश्यों ने अपने साथ नाइंसाफी को लिया है और यही कारण है कि एनडीए के बाद गणराज्य-राज्य जिन परिवारों में अपने साथ नाइंसाफी को मुद्रदा बनाएंगी।

अन्यथा जनता और सुरक्षा को खाता रखने की मुख्य जिम्मेदारी संघ के प्रकार उद्देश्यों ने अपने साथ नाइंसाफी को लिया है और यही कारण है कि एनडीए के बाद गणराज्य-राज्य जिन परिवारों में अपने साथ नाइंसाफी को मुद्रदा बनाएंगी।

अन्यथा जनता और सुरक्षा को खाता रखने की मुख्य जिम्मेदारी संघ के प्रकार उद्देश्यों ने अपने साथ नाइंसाफी को लिया है और यही कारण है कि एनडीए के बाद गणराज्य-राज्य जिन परिवारों में अपने साथ नाइंसाफी को मुद्रदा बनाएंगी।

अन्यथा जनता और सुरक्षा को खाता रखने की मुख्य जिम्मेदारी संघ के प्रकार उद्देश्यों ने अपने साथ नाइंसाफी को लिया है और यही कारण है कि एनडीए के बाद गणराज्य-राज्य जिन परिवारों में अपने साथ नाइंसाफी को मुद्रदा बनाएंगी।

अन्यथा जनता और सुरक्षा को खाता रखने की मुख्य जिम्मेदारी संघ के प्रकार उद्देश्यों ने अपने साथ नाइंसाफी को लिया है और यही कारण है कि एनडीए के बाद गणराज्य-राज्य जिन परिवारों में अपने साथ नाइंसाफी को मुद्रदा बनाएंगी।

मिजाज के साथ बदलता गया मतदान

भारत के 543 लोकसभा क्षेत्रों के मतदाता 19 अप्रैल से 1 जून के बीच सात चरणों में वोट डालेंगे। मतलब, देश में 44 दिनों तक मतदान काल चलेगा और सात दिन मतदान होगा। साल 1951-52 में हुए पहले लोकसभा चुनाव के बाद यह अब तक का सबसे लंबा मतदान काल होगा, पहले चुनाव के लिए मतदान करने में देश को 120 दिन लगे थे। तब से अब तक देश में बहुत कुछ बदला है। पेश है शुजा असरार और तनय सुकुमार की डाटा आधारित रिपोर्ट...

भारत को चुनाव का इंतजार था और चुनाव दहलीज पर आ पहुंचा है। पहले दौर का मतदान 19 अप्रैल को होना है और अब उसके लिए एक महीने का समय भी शेष नहीं है। 19 अप्रैल को 102 लोकसभा सीटों के लिए मतदान होगा। 26 अप्रैल को 89 सीटें के लिए, 5 मई को 94 सीटें, 13 मई को 96 सीटें, 20 मई को 49 सीटें, 25 मई को 57 सीटें और 1 जून को 57 सीटें पर मतदान होगा। मतलब, देश में मतदान का समय 44 दिन तक जारी रहेगा। इस दौरान जमकर चुनाव प्रचार होगा और राजनीति के अधिक से अधिक धन व समय खर्च करते हुए मतदाताओं को मतदान के द्वारा तक खींच लाना होगा।

इन दिनों दो लोकसभा चुनावों को विशेष रूप से याद किया जा रहा है। देश का पहला चुनाव, जब मतदान में 120 दिन लगे थे और साल 1980 का लोकसभा चुनाव जब मतदान का समय महज चार दिन रहा था। आज मतदान के 120 दिन के बारे में सोचकर जितना की अश्वर्य होता है, उससे कहीं ज्यादा अश्वर्य 4 दिन में संपन्न मतदान के बारे में चिचार से होता है। खैर, इस बार चुनाव 2024 में यह अनुमान लगाया जा रहा था कि चुनाव जल्दी होगे और कम चरणों में होंगे, पर चुनाव अयोग ने बड़ा जोखिम लिया मतदान को सात चरणों में बांट दिया है। और इंतजाम के स्तर पर चुनाव अयोग किसी भी तहत की कमी नहीं छोड़ा चाहता है, अब: उसने संवेदनशीलता के हिसाब से पूरे विस्तार से चुनाव करने का फैसला लिया है। भारत के 543 लोकसभा क्षेत्रों में मतदान करना कठिन आसान काम नहीं है।

चुनाव करने का भी देश में लगातार बढ़ रहा है। पहले लोकसभा चुनाव में केंद्र सरकार को करीब 10 करोड़ रुपये खर्च करने पड़े थे, पर अब लगता है कि वर्तमान चुनाव में 4,000 करोड़ रुपये से ज्यादा खर्च होने वाले हैं। पिछले लोकसभा चुनाव 2019 में केंद्र सरकार के 3,870 करोड़ रुपये खर्च हुए थे। इस खर्च में मतदान पहचान पत्र बनाने से लंगर मतदान की इलेक्ट्रॉनिक मशीनों को चुनाव के बाद ठिकाने लगाने या उनकी सफाई करने तक का खर्च शामिल है।

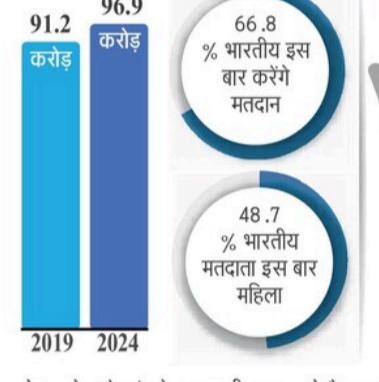
चुनावी खर्च में राजनीतिक दलों के भी तमाम खर्चों को अगर जोड़ दिया जाए, तो भारत में लोकसभा चुनाव के साथ करीब 60,000 करोड़ रुपये की अर्थव्यवस्था जुड़ी हुई है। विभिन्न एंटरप्रार्सों के अनुमान के अनुसार, पिछले लोकसभा चुनाव में 55,000 करोड़ रुपये के लगभग खर्च हो गए थे। पिछली सीढ़ी के चुनाव में इतना खर्च नहीं होता था। हम देखते हैं कि अधिक उदाहरण और तत्कालीन के समय में चुनाव खर्च भी खूब बढ़ रहा है। हालांकि, यह एक एसएस खर्च है, किमी करने की कहीं चर्चा तरह नहीं है।

सीएएस ईडीएक्स के एक अनुमान के अनुसार, पिछले दशकों में भारत का चुनाव संभवी खर्च कुछ ज्यादा ही तेजी से बढ़ा है। इस बार भीषण गर्मी में मतदान का प्रतिशत ज्यादा फोकस में रहेगा, लेकिन आंकड़ों से पता चलता है कि भारतीय मतदान चुनाव में अपनी भागीदारी बढ़ा रहे हैं। दृष्टिकोण और उत्तर-दूर्वा के कई राज्यों ने 2019 में



लोकसभा चुनाव

मतदाताओं पर एक नजर : देश भर में 96.9 करोड़ लोग लोकसभा चुनाव 2024 में करेंगे मतदान



हमारे लोकतंत्र का सबसे बड़ा उत्सव है यह चुनाव। देश में 17 बार लोकसभा चुनाव हो चुके हैं और 18 वें चुनाव की घोषणा हो चुकी है। कोई शक नहीं कि अब नए-पुराने आंकड़ों का ही सबसे ज्यादा महत्व है। आंकड़ों की रोशनी में ही चुनाव और देश के मिजाज को समझने में मदद मिल सकती है।

45- वर्तमान लोकसभा चुनाव 2024 भारत का दूसरा सबसे लंबा चुनाव होगा। आजाद देश में हुआ पहला लोकसभा चुनाव।

40- 1951-52 अब तक का सबसे लंबा चुनाव हो चुका है।

35- 120 दिन चला देश में हुए पहले लोकसभा चुनाव में मतदान।

30- 1971 वर्ष से लोग भी बहुत हैं, जिनका नाम चुनाव मतदान सूची से विभिन्न कारणों से हटा दिया गया है।

25- इस वार ऐसे लोग भी बहुत हैं, जिनका नाम चुनाव मतदान सूची से विभिन्न कारणों से हटा दिया गया है।

20- कुल ऐसे मतदाता 1.66 करोड़

15- 68 लाख

10- 75 लाख

5- 22 लाख

0- चुनाव के दिनों की गणना मुख्य चुनाव समय सारिए के अनुसार की गई है।

कुछ सीटों के चुनाव में किसीही कारणों से ज्यादा समय भी लगा है।

बढ़ता चुनावी खर्च 10,000

करोड़ रुपये के करीब खर्च हुए थे साल 1999 के लोकसभा चुनाव में, विभिन्न आकलनों के अनुसार।

20,000

करोड़ रुपये के करीब खर्च हुए थे साल 2009 के लोकसभा चुनाव में, विभिन्न आकलनों के अनुसार।

करोड़ रुपये के करीब खर्च हुए थे साल 2019 में, विभिन्न आकलनों के अनुसार।

55,000

करोड़ रुपये के करीब खर्च हुए थे साल 2019 में, विभिन्न आकलनों के अनुसार।

चुनाव में बढ़ता चला जा रहा है केंद्र सरकार का व्यवहार

मतदाता सूची बनाने से लेकर इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों तक तुनाव का खर्च बढ़ता जा रहा है। पहले कुछ करोड़ रुपयों में ही चुनाव हो जाता था, पर अब हजारों करोड़ रुपये खर्च होने लगे हैं। देश में अनेक विभागों की भागीदारी होती है और चुनाव के लिए केंद्र सरकार को बहुत खर्च करना पड़ता है। नीचे दिए गए सभी आंकड़े करोड़ रुपये में हैं।

वर्ष	दूसरा साल
1951-52	10
1957	6
1962	7
1967	11
1971	12
1977	23
1980	55
1984-85	82
1989	154
1991-92	359
1996	597
1998	666
1999	948
2004**	1016
2009	1114
2014	3870

** इसमें तब हुए विधानसभा चुनाव का खर्च शामिल है। खर्च में चुनाव कार्यालय, मतदाता सूची, चुनाव कार्यालय व कार्यालय पर का खर्च शामिल है।

चुनाव में दोरों पार्टीयों आंकड़ा है भाग्य, पर बहुत कम हैं जीतने वाली पार्टीयां

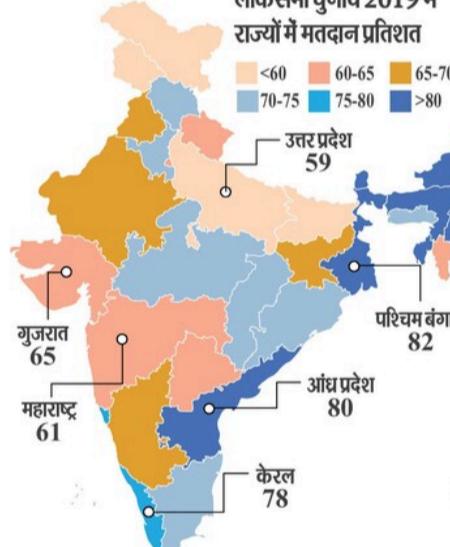
राजनीतिक पार्टीयों की संख्या में चुनाव दर चुनाव बढ़ता का क्रम देखा जा रहा है -

■ ऐसे दल जिनके क्रम से कम से कम एक सीट मिली

■ अन्य ज्यादातर दल, जो एक भी सीट न जीत सके



स्रोत : भारतीय चुनाव अयोग, त्रिवेदी सेंटर फॉर पॉलिटिकल डाटा, सीएमएस मीडिया, बजट डॉक्यूमेंट्स, मिट रिसर्च एंड एनालिसिस, पारस जैन, मिट



अपना खेल

'ओए गुरु'...कमेंट्री बॉक्स में एक बार फिर गूंजेगी सिद्धूवाणी

नई दिल्ली, एजेंसी। अपनी शायरी और जुलूलेबाजी से किसी भी महफिल या कमेंट्री को दिलचस्प बनाने वाले और 'गुरु' उर्फ नवजीत सिंह सिद्धू राजनीति को पांछे छोड़कर एक बार फिर कमेंट्री बॉक्स में बापापी बोलकर सिद्धू आईपीएल के जरिए करीब एक दशक बाद दर्शकों को अपने नियाते अंदाज में मैचों का आंखों देखा हाल मुनाने के लिए तैयार हैं।

हमें पापाड़ी थी। मैं बहुत खुशकिस्मत हूं कि मेरा शौक ही मेरा पैरा बना। एक बत्तख का बच्चा कभी तेरना नहीं भूलेगा, मैं कमेंट्री में वैसे ही उत्तरणों जैसे मछली पानी में उतरती है।

प्रत्येक दिन के 25 लाख

सिद्धू ने कहा, शुरू में कमेंट्री को लेकर आश्वस्त नहीं था। मार विश्व कप में 10-15 दिन में ही सिद्धूवाणी

के चर्चे हो गए। मैं सबसे अलग रास्ते पर था। उड़ाने कहा, एक पूरे ट्रॉपिकल के लिए 60 से 70 लाख रुपए लेने से शुरू कर आईपीएल तक मैं प्रत्येक दिन के 25 लाख रुपए ले रहा था। संघीय पैसे की नहीं थी, इस बात को लेकर थी कि समय बीत जाएगा।

सोशल मीडिया पर पोस्ट

स्टार स्पोर्ट्स से सोशल मीडिया

- अकाउंट पर पोस्ट डाली - सरकार ऑफ कमेंट्री बॉक्स इज बैक। सिद्धू ने भी इस पोस्ट को शेयर किया है। हालांकि यह जारी रखने नहीं आई है कि वह आईपीएल में किस भाषा में कमेंट्री करेंगे।



2014-15 के बाद अब...

सिद्धू ने कहा, मैं दिमागी और पर मजबूत हूं, इसलिए किसी भी स्थिति को संभाल सकता हूं। किंठटम में, मैं लाभग 20 बार वापसी कर चुका हूं। कमेंट्री में पहली बार वापसी कर चुका हूं। मैंने वर्ष 1999 से 2014-15 तक नियमित रूप से कमेंट्री की थी।

पिता के लिए क्रिकेटर बने

नवजीत सिंह सिद्धू के पिता सरदार भगवंत सिंह क्रिकेटर थे। वह चाहते थे कि उनका बेटा भी उनकी तरह खिलाड़ी बने। अपने पिता की इच्छा को पूरी करने के लिए सिद्धू क्रिकेट में आए। 1983 से 1999 तक टीम इंडिया का हिस्सा रहे। उड़ाने कुल 51 टेस्ट और 136 वनडे मैच खेले।

पूर्व अंतरराष्ट्रीय एथलीट बुधवा उरांव का निधन

जारशेदपुर वरीय संवाददाता। पूर्व अंतर्राष्ट्रीय एथलीट बुधवा उरांव (लगभग 75 वर्ष) का मंगलवार को जमशेदपुर के मानोग अपार्टमेंट में निधन हो गया। वे टीमेसी भी रह चुके थे। खेल कोटे से उनका चयन हुआ था। वह झारखंड एथलेटिक्स एसोसिएशन के पूर्व सचिव भी रह चुके थे। उड़ाने 1985 में मास्को ओलंपिक में 800 मीटर की दौड़ में चौथे स्थान प्राप्त किया था। 1986 के एशियन गेम्स में 800 मीटर की दौड़ में तकनीकी गलती के कारण स्वर्ण पदक से चक्र गए थे। वर्ष 1989 में कनाडा बल्लंड पुलिस मीट में उड़ाने एक गोल्ड और गोल्ड पुलिस मीट में जीता था। 1987 में दाक में साउथ एशियन गेम्स में नए राष्ट्रीय रिकॉर्ड के साथ गोल्ड मेडल जीता था। उनकी बेटी रोशनी ने बताया कि सहारा स्टीटी स्थित मकान में ही उड़ाने अंतिम सांस ली। उनके पांच बेटे और एक बेटी हैं। इटकें स्थित उनके गांव में पार्थिव शरीर को ले जाया जाएगा और वहाँ अंतिम संस्कार होगा।

महिला टी-20 में इंग्लैंड को बढ़त

डुनिंहन। कानान हीर नाइट की 63 रन की अर्धशतकीय पारी के बाद कसी हुई गेंदबाजी के दम पर इंग्लैंड की महिला क्रिकेट टीम ने पहले टी-20 में न्यूजीलैंड को 27 रन से हरा दिया। मंगलवार को इस जीत से मेजबान टीम ने तीन मैचों की बेटीज में बदलता हुआ भी जीत ली है। न्यूजीलैंड ने टीस जीत पहले गेंदबाजी का फैसला किया।

इंग्लैंड ने 20 ओवर में चार विकेट पर 160 रन का स्कोर बनाया। इसके जबाब में कानान सुझी बेस के 65 रन और बल्लंड की टीम पांच विकेट पर 135 रन ही बना सकी।

ससेक्स के लिए खेलेंगे उनादक्ट

हो। भारत के बाएं हाथ के तेज गेंदबाज जयदेव उनादक्ट इस साल काउंटी चैपियनशिप में इंग्लैंड के क्लबब सेसेक्स की तरफ से अंतिम पांच मैच में खेलेंगे।

जेसन रॉयन निजी कारणों से हटे

है। इंग्लैंड के जेसन रॉयन निजी कारणों से हट गए हैं।

हालांकि उनकी जगह कोलकाता नाइट रायडर्स ने उनके हमवतन फिल साल्ट को शिक्षित किया है। वही इंग्लैंड के गेंदबाज नहीं होनी चाहता था। राजस्थान ने उन्हें 10 करोड़ रुपये में खरीदा था।

राजस्थान रॉयल्स के तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा लगातार दूसरे साल नहीं दिखेंगे। क्रिकेटरी में उनकी कैरियरी हड्डी की दीरान घोल रही है। उन्होंने बताया कि जीत की दौड़ में खेलना चाहता था।

जेसन रॉयन निजी कारणों से हट गए हैं।

उनके बाद उनकी जगह कोलकाता नाइट रायडर्स ने उनके हमवतन फिल साल्ट को शिक्षित किया है। वही इंग्लैंड के गेंदबाज नहीं होनी चाहता था।

जेसन रॉयन निजी कारणों से हट गए हैं।

उनके बाद उनकी जगह कोलकाता नाइट रायडर्स ने उनके हमवतन फिल साल्ट को शिक्षित किया है। वही इंग्लैंड के गेंदबाज नहीं होनी चाहता था।

जेसन रॉयन निजी कारणों से हट गए हैं।

उनके बाद उनकी जगह कोलकाता नाइट रायडर्स ने उनके हमवतन फिल साल्ट को शिक्षित किया है। वही इंग्लैंड के गेंदबाज नहीं होनी चाहता था।

जेसन रॉयन निजी कारणों से हट गए हैं।

उनके बाद उनकी जगह कोलकाता नाइट रायडर्स ने उनके हमवतन फिल साल्ट को शिक्षित किया है। वही इंग्लैंड के गेंदबाज नहीं होनी चाहता था।

जेसन रॉयन निजी कारणों से हट गए हैं।

उनके बाद उनकी जगह कोलकाता नाइट रायडर्स ने उनके हमवतन फिल साल्ट को शिक्षित किया है। वही इंग्लैंड के गेंदबाज नहीं होनी चाहता था।

जेसन रॉयन निजी कारणों से हट गए हैं।

उनके बाद उनकी जगह कोलकाता नाइट रायडर्स ने उनके हमवतन फिल साल्ट को शिक्षित किया है। वही इंग्लैंड के गेंदबाज नहीं होनी चाहता था।

जेसन रॉयन निजी कारणों से हट गए हैं।

उनके बाद उनकी जगह कोलकाता नाइट रायडर्स ने उनके हमवतन फिल साल्ट को शिक्षित किया है। वही इंग्लैंड के गेंदबाज नहीं होनी चाहता था।

जेसन रॉयन निजी कारणों से हट गए हैं।

उनके बाद उनकी जगह कोलकाता नाइट रायडर्स ने उनके हमवतन फिल साल्ट को शिक्षित किया है। वही इंग्लैंड के गेंदबाज नहीं होनी चाहता था।

जेसन रॉयन निजी कारणों से हट गए हैं।

उनके बाद उनकी जगह कोलकाता नाइट रायडर्स ने उनके हमवतन फिल साल्ट को शिक्षित किया है। वही इंग्लैंड के गेंदबाज नहीं होनी चाहता था।

जेसन रॉयन निजी कारणों से हट गए हैं।

उनके बाद उनकी जगह कोलकाता नाइट रायडर्स ने उनके हमवतन फिल साल्ट को शिक्षित किया है। वही इंग्लैंड के गेंदबाज नहीं होनी चाहता था।

जेसन रॉयन निजी कारणों से हट गए हैं।

उनके बाद उनकी जगह कोलकाता नाइट रायडर्स ने उनके हमवतन फिल साल्ट को शिक्षित किया है। वही इंग्लैंड के गेंदबाज नहीं होनी चाहता था।

जेसन रॉयन निजी कारणों से हट गए हैं।

उनके बाद उनकी जगह कोलकाता नाइट रायडर्स ने उनके हमवतन फिल साल्ट को शिक्षित किया है। वही इंग्लैंड के गेंदबाज नहीं होनी चाहता था।

जेसन रॉयन निजी कारणों से हट गए हैं।

उनके बाद उनकी जगह कोलकाता नाइट रायडर्स ने उनके हमवतन फिल साल्ट को शिक्षित किया है। वही इंग्लैंड के गेंदबाज नहीं होनी चाहता था।

जेसन रॉयन निजी कारणों से हट गए हैं।

उनके बाद उनकी जगह कोलकाता नाइट रायडर्स ने उनके हमवतन फिल साल्ट को शिक्षित किया है। वही इंग्लैंड के गेंदबाज नहीं होनी चाहता था।

जेसन रॉयन निजी कारणों से हट गए हैं।

उनके बाद उनकी जगह कोलकाता नाइट रायडर्स ने उनके हमवतन फिल साल्ट को शिक्षित किया है। वही इंग्लैंड के गेंदबाज नहीं होनी च



दीजिए अपनी आँखों को कुदरती आई मंत्रा

प्रयोग विधि: 2 से 3 ड्रॉप्स दिन में तीन बार या
चिकित्सकीय परामर्शनुसार इस्तेमाल करें।



12 गुणकारी आयुर्वेदिक औषधियों जैसे गुलाब,
तुलसी, आंवला, नीम, पुदीना, शहद इत्यादि के
योग से बनी 'आई मंत्रा' आयुर्वेदिक आई ड्रॉप्स
आँखों में होने वाली समस्याओं जैसे आँखों की
थकान, आँखों का सूखापन, आँखों पर दबाव कम
कर उड़ें स्वस्थ व शीतल रखने में सहायक है।
आयुर्वेदिक होने के कारण यह सुरक्षित है एवं
इसका आँखों पर कोई दुष्प्रभाव भी नहीं पड़ता।

24x7 Helpline: 8196822222 • www.eyemantra.com



'घोस्ट पार्टिकल' खोजने को सबसे बड़ी भूमिगत प्रयोगशाला तैयार

चीन के काइपिंग शहर में जमीन से 700 मीटर नीचे दुनिया की सबसे बड़ी भूमिगत प्रयोगशाला बनकर तैयार हो गई है। 35 मीटर व्यास वाली गोलाकार प्रयोगशाला का कार्य 'घोस्ट पार्टिकल' की खोज करना है। जियांगमेन न्यूट्रिनो ऑब्जर्वेटरी इस साल के अंत तक खोज में जुट जाएगी।

क्या है 'घोस्ट पार्टिकल'

घोस्ट पार्टिकल इलेट्रॉन हैं, पर इनका भार न के बराबर होता है। इसे ब्रह्मांड का सबसे मायाती कांग कहते हैं। यह इन्हें देखना बहुत मुश्किल है। देजानिकों के मुताबिक इसे संकेत हास्पर शरीर से कम से कम 10 ट्रिलियन घोस्ट पार्टिकल गुजरते हैं। इनकी गति प्रकाश की गति जितनी होती है।

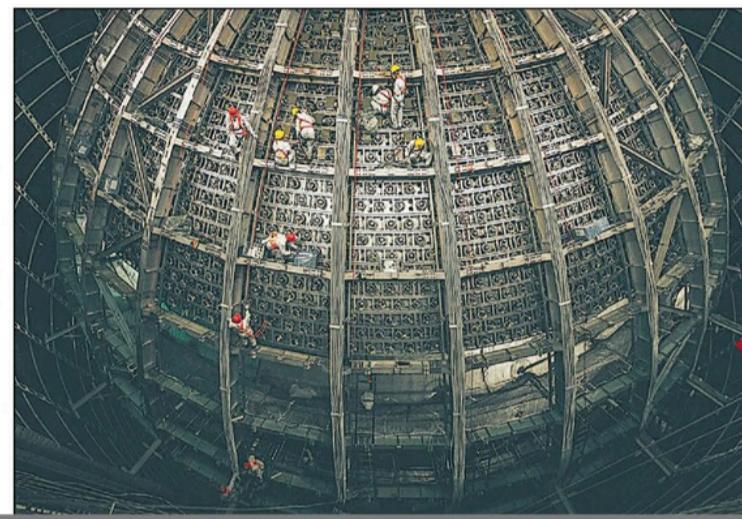
ब्रह्मांड की उत्पत्ति का पता

लगाने में मिलेगी कामबायी

ब्रह्मांड में जो घोस्ट पार्टिकल हैं, उनमें से ज्यातात्र का निर्माण या बैंक वैकल्पिक बना था। घोस्ट पार्टिकल का अध्ययन ब्रह्मांड और पृथ्वी के निर्माण के रहस्य से पर्दा उठ सकता है। घोस्ट पार्टिकल ऐसे हैं, जो भौतिक विज्ञान के हर नियम को बुनिया देते हैं। आज तक वैज्ञानिक इस हस्त को सुलझा नहीं पाए हैं कि आखिर ये पार्टिकल किस तरह का व्यवहार करते हैं।

अमेरिका और जापान भी बना रहे

अमेरिका और जापान में भी ऐसी ही प्रयोगशाला का निर्माण हो रहा है। अमेरिका की प्रयोगशाला वर्ष 2031 से काम करने वाले शुरू करेंगी, जबकि जापान ने इसके लिए वर्ष 2027 तक किया है। यह से मैं बीन इस क्षेत्र में काम करने वाला पहला देश होगा।



700

मीटर जमीन के नीचे बनाई गई,
37.6 करोड़ डॉलर का उत्तरांतरा
आया निर्माण में

हर सेकंड हमारे शरीर से कम से कम 10 ट्रिलियन घोस्ट पार्टिकल गुजरते हैं। इनकी गति प्रकाश से तेज होती है।

तकनीक 30s

स्टेटस में जल्द शेरर कर पाएंगे लंबे वीडियो

काटस-एप रेटेस्टस जल्द अपग्रेड होने वाला है। इससे यूजर लंबे वीडियो आसानी से पोर्ट कर सकेंगे। वैटोडिफो के रिपोर्ट के रिपोर्ट के मुताबिक, लग 30 सेकंड की बायाएक मिनट का वीडियो शेरर कर पाएंगे। रिपोर्ट के अनुसार, काटस-एप ने यूजर की मांग को ध्यान में रखकर रेटेस्ट लिमिट बढ़ाने के फसलियां लिया है। एक मिनट की अवधि के साथ यूजर विना फिल्टर किए पूरी वीडियो शेरर कर पाएंगे। फिल्हाल, इसकी ट्रेटिंग बदल ही है। आम अभी बीटा ट्रेटर्स के लिए उपलब्ध है। आम यूजर के लिए इसकी घोषणा जल्द की जा सकती है।

यूट्यूब पर गाने की खोज करना और आसान होगा

कंपनी ने यूट्यूब यूजर के लिए एक नया फीचर तैयार किया है। इसके जरिए यूट्यूब यूजर का प्रियसे गाने को गुन्नानकर भी सर्व कर पाएंगे। यानि लिरिक्स को लियकर या वोयस सर्व में बोलकर सर्व करने की ज़रूरत नहीं होती है। अगर यूजर को गाने की बुन याद है, तो गुन्नानकर सर्व कर सकते हैं। इसके लिए यूजर को यूट्यूब म्यूजिक एप में जाना होगा और सर्व बाहे पर लियकर करना होता है। वॉयस सर्व में आप बोलकर किसी गाने को सर्व कर सकते हैं। वही सामने में गुन-गुनाकर किसी यूजिक को सर्व कर सकेंगे।

ट्रूकॉलर स्पैम नंबर को खुद ब्लॉक कर सकेगा

ट्रूकॉलर ने एआई-फीचर मैक्स को पेश किया है। इसे एंड्रॉयड के प्रीमियम सल्फोन्क्राइडर्स के लिए लाया गया है। यह एसे कॉल खुद ही ब्लॉक कर सकता है जो वैरिएटी नहीं है। इसके अलावा यह उन कॉल्स को भी ब्लॉक कर देता है, जो एआई की नजर में रखी है। यह एक फीचर यूजर के पास आम वाली स्मैस कॉल की ध्यान में रखते हुए लाया गया है। पिछले महीने कंपनी ने एआई-पार्किंग कॉल रिकॉर्डिंग फीचर भी पेश किया था। यह फीचर कॉलिंग के दौरान ट्रूस्टाइक्षन और कॉल समरी की सुविधा प्रदान करता है। प्रीमियम मंथनी प्लान 75 रुपये से शुरू होता है।

दुनियामर में खाद्य असुरक्षा से दांत खराब होने और मसूड़ों में सूजन की समस्या अधिक चिंताजनक: पौष्टिक भोजन की कमी से बढ़ रही मुंह की खराबत खारापन की बीमारियों और संबंधित बीमारियों की खोज करना चाहिए।



इसलिए मनाया जाता है यह खास दिवस

इसलिए मनाया जाता है यह खास दिवस को अंतरिक्ष में यात्रा करने वालों द्वारा किया जाता है। इस दिन लोगों को मूँह के स्वास्थ्य के महत्व के बारे में जागरूक किया जाता है। इस दिन लोगों को मूँह के स्वास्थ्य के महत्व के बारे में जागरूक किया जाता है। इस दिन लोगों को मूँह के स्वास्थ्य के महत्व के बारे में जागरूक किया जाता है। इस दिन लोगों को मूँह के स्वास्थ्य के महत्व के बारे में जागरूक किया जाता है।

350

करोड़ लोग मूँह से संबंधित वीमारियों से पीड़ित हैं दुनियामर में

जरूरी पोषण नहीं मिल रहा

पीषिंग और पर्याप्त भोजन की समस्या से बढ़ रही है।

अध्ययन के मुताबिक, पिछले साल जन में ब्रिटिश सोसाइटी ऑफ अंतरिक्ष एंड टेलिकॉम (बीएसी) ने अंतरिक्ष माध्यम से लोगों से बढ़ावा किया। इनमें उन्ने मूँह संबंधित बीमारियों और खोज करना चाहिए।

अध्ययन में ब्रिटेन के लोगों को शामिल किया गया। करीब 17 फीसदी परिवार मूँह की बीमारियों की चोपते में पाए गए। इसमें बढ़ावा याद है कि पांच साल से

भारत समेत दुनिया का हाल

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, सड़े दांत, सूजे और मूँह का कैसर यांत्र और ग्रहण के महत्व के बारे में जागरूक किया जाता है। जिनमें जारी रखने की वीमारियों की देखती हैं। एसी फीसदी से ज्यादा आवादी पीड़ित है। यानी दुनियामर में करीब 350 करोड़ दांतों की बीमारियों से संबंधित हैं। इनमें से करीब 75 फीसदी प्राप्तवात आवादी निम्न और मध्यम आय वाले देशों में रह रही है।

जंक फूड से बुरी तरह प्रभावित हो रहे दांत

दुनियामर में जंक फूड प्रबलन में है। इसका सहत से साथ दांतों पर बुरा असर पड़ रहा है। इसमें दांतों में संदर्भ और पार्यायिक जैसी समर्याएं बढ़ती हैं। उन्होंने बाताया, जंक फूड में नमक व शब्दकर की मात्रा अधिक होती है, जिससे दांतों पर बुरा असर पड़ता है।

कम 29.3 फीसदी दांतों में कैविटी की समस्या है। इनमें ही नहीं, वर्ष 2021 से 2022 तक ब्रिटेन में 19 साल तक 26,741 लोगों के खारब

वाशिंगटन, एजेंसी। स्पेसएक्स ने मंगलवार को 22 स्टारलिंक सेटेलाइट्स का नया बैच लॉन्च किया। बैलिफोनिया के बेडनबर्म योस्स फोर्स बेस से फाराक्सन-9 रोकेट की मदद से उपग्रेडों को अंतरिक्ष में पहुंचाया गया।

बूस्टर के वापस धरती पर लौटने के बाद रोकेट के ऊपरी रख छुपे और मूँह का पृथक्की की वेडनबर्म योस्स फोर्स के बेस से फाराक्सन-9 रोकेट की मदद से उपग्रेडों को अंतरिक्ष में पहुंचाया गया।

बूस्टर के वापस धरती पर लौटने के बाद रोकेट के ऊपरी रख छुपे और मूँह का पृथक्की की वेडनबर्म योस्स फोर्स के बेस से फाराक्सन-9 रोकेट की मदद से उपग्रेडों को अंतरिक्ष में पहुंचाया गया।



दोनों मिलकर स्मार्टफोन में सेटेलाइट इंटरनेट कनेक्टिविटी पेश करना चाहती है। कंपनी को लगता है कि अगले कुछ साल में यह संभव हो जाएगा।

24x7 Helpline: 85568 0999

Dr. Juneja's

ACCUMASS

वज़न बढ़ाएँ
आल्मिश्वास नगाएँ